

2062 I

NSA ARCHIVES

51

उपलक्षणानाम् कवी कुमावतः ॥

दया न्यावि २४४ रुगमगमहिष स्वच्छि त्वे मुमु (६) दू (३) इ र्माहि हं कि रव उममसदा
 संपदीनाष्टलक्षि ॥ सर्वाय धनीय नमः सर्वद्वानि ४२ दनं चापेमा स्म अनिह्य चापे हवे
 वे नीहले धर्तृकृष्ण न नक्षार्थ सहा नायह न नक्षार्थ मर्क वनं दर्व धन हस्ति न मा म्हा ॥
 ॥ १ ॥ यावच्छमयपि उ न कि ॥ श्री की नक्ष ॥ गणपतये नमः ॥ ह द्या हादिक क ॥ ६ ॥ गि
 द सें द म द न द्वा द म द्वा द सा न वा सी न वान म ॥ उरु क ध स ह न क ॥ ४ ॥ स सु न
 नी ह की न त्वा ह्य क त्वे स न न ग नी व धू र्प न मा मि ॥ ॥ वा न हा व म हा नी डी

कोमा नी न क ला व नि न क व सु प नि ध ना सि न्द्र ना न्द्र शा व ग हा वि नु नु जी ॥
 कि ४२ र्त्ति सिद्धि पाय ध ना ॥ ७ ॥ कोमा र्त्त प न म ॥ ४ ॥ कि म य न व न वा ह नी ॥ न
 क पृष्ठा न ग दि वी न क मा ला व सा हि नी को ला पु र्णी म रु द ग व ष व शानि
 वा सि नी ॥ या म्प पि १० कि ना नी र्त्ति को मा नी त्वे न मा म्भुत ॥ रु सि पृ वी धि का
 रि च भ न्द्र भा व धि ला काल ना ग्री र वा ॥ १ ॥ वि पालि कृ द्वि का र्त्ता
 ने व न व क थि ना हा रु मा सि धि ला ॥ १ ॥ र्त्ति र्त्ति र्त्ति र्त्ति र्त्ति र्त्ति र्त्ति र्त्ति र्त्ति र्त्ति
 रु व न न न नी नो मि द वी कृ मा नी ॥ ॥

ॐ ह्रीं शिरसे २ ॥ ॐ ह्रीं शिरवायेव षट् ॥ ॐ ह्रीं क
वचोय ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय षोडश ॥ ॐ ह्रीं श्रु
त फट् ॥ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रजपिः ॥ शिरसि ॥
गायत्री द्वादश ॥ मुखे ॥ श्रुग्निर्देवता ॥ हृद
ये ॥ प्राणायामे विनियोगः ॥ ॥ प्राणाः
याम ॥ ह्रीं पूरक १६ ॥ ह्रीं कुंभक ६४ ॥ ह्रीं

चक्र ३२ ॥ इति प्राणायामः ॥ ॥ ह्रीं रक्त
नासा ॥ ह्रीं वामनासा ॥ ह्रीं वामनासा ॥ स्वर्गः
भैरवरूपं भावयेत् ॥ इति प्राणतत्त्वाः ॥
॥ पुनः प्राचम्य ॥ हृत्स्थं न्यास ॥ तत्त्वजोडाडा
लागी धिद्विष्टे ॥ ॐ रक्त भूषा वरो रं रायथा
यहोयवीतिनी ॥ हंसपद्मासनावासाव

तुर्वक्त्रावतुर्भजा ॥ शुगदा मालिनी दसे
वामेदकमराऽर्तु ॥ वास्मीमस्तत्रिसंध्यायीः
प्रातस्थारक्तवर्तनी ॥ ॥ जोनाजोनावः
गायत्रीजये ॥ धार १० ॥ ॥ वानोमेशान
लंखनतुहावदक्षनाशानयिकाये पाप

पुरुषं ब्रह्मशिलासवाये मनु ॥ ॐ ह्रीं सर्वः
यायस्य कामनाथ ईदं जय गृहान्त्याः
हा ॥ धार ३ ॥ दक्षजातुवामजातुपादत
रुशिरसधिमेमत्र ॥ ॐ ह्रीं श्यादित्यैव
शिवं विद्यातु शिवमादित्यरूपिणी ॥ ॐ
भयोरंतरं नास्ति श्यादित्यस्य शिवस्य

व॥ इति मध्याह्नं संध्या ॥ ॥ पुनः जात
म्या॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं सर्वभ्यो मंत्रेभ्यो स्वाहा ॥
परिधिभ्यो २ ॥ धमतेभ्यो वीषदू ॥ धमनुत्वेभ्यो
वषट् ॥ धपित्रीभ्यः स्वधा ॥ ॐ ह्रीं सः सूर्या
यतयं न्यामि नमः ॥ प्रकाशशक्ति ॥ नारी ॥ ल
क्ष्मि ॥ अघोर ॥ अघोरे स्वरि ॥ मृत्युंजय ॥

अमृतलक्ष्मी ॥ ॐ ध ह २ आ १ द स २ कुजा ना
थ कुष्ठिकादेवैत र्थयामि नमः ॥ उग्रचरा ॥
सिंहाय नमः ॥ ध ते त र्थरायाय ॥ ॥ अ
पराहू संध्या ॥ न्यासलिये ॥ ॥ ॐ ह्रीं सर्व
भ्यो नमः ॥ आत्मस्तीनाय नमः ॥
स्वस्थानवासे भवन्तु ॥ इति त्रिसंध्याविधिः ॥

ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ततो जो नागेय विधि ॥
तित्व नावम्य ॥ प्रातर्त्त ध्यायाय ॥ हस्त जो ना
काया जो लखन हय ॥ उकार ॥ जो न जे छे ॥ ॐ न
मो वाच तये ॥ नारद उवाच ॥ भगवत् सर्व व
र्म ह्यस्त तत्त्व विदाम्बर श्रोतुमिहाम्यहं देव न
व तत्त्व स्य लक्षणा ॥ इह स्यति उवाच ॥ शृणु वः

स्मर्य परगुह्यं यन्नित्र याय नाशनी ॥ कौरव
धर्मसूत्रं द्वितीयं देता त्रीतीयं नागदेवत्वं
चतुर्थं सोमदेवता यंचर्मवीरी देवत्वं षष्ठं
चैव पुजायति स फलं वासुदेवत्वं मधुसूदनं
वता नवमं सर्वदेवत्वं मित्यत्र न सुत्रं ॥ नारद
उवाच ॥ केन वा याजितं सुत्रं केन वा त्रिगुणीकृतं
महेश्वरकृतं ग्रन्थं गायत्रियसं विता ॥ तस्मा

ASIA ARCHIVES

100-2-11-11-11

2062

I

100-2-11-11-11

I

2062

ASIA ARCHIVES

શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા

પ્રથમ અધ્યાયઃ શ્રી યોગેશ્વર ગીતા

૧૦૮ શ્લોકો આશ્રમ સંન્યાસ યોગ

શ્રી કૃષ્ણાર્જુન સંવાદઃ

શ્રી યોગેશ્વર ગીતા

सर्वप्रथमेन त्रिविधं ध्यात्वा तेज गत ॥ ॐ काराय
 नमः ॥ ॐ शुक्रदेवाय नमः ॥ ॐ नाग ॥ ॐ सोम ॥
 ॐ प्रिति ॥ ॐ पुत्र ॥ ॐ वासु ॥ ॐ सूर्य ॥ ॐ सर्व ॥
 ॥ मध्याग्राय त्रि १०८ ॥ सुजग्राय त्रि ॥ ३ ॥ ऐव ॥
 विष्णु ॥ अघोर ॥ मृत्युजय ॥ पश्चिम ॥ उग्रवन्द
 ॥ सि. का. ॥ निविशनाथाय विद्महे श्रीकराहाय
 विमहिर्ते नकु विप्रबोदया ॥ ३ ॥ त्रि ॥ निवान ॥
 जपलये ॥ सृजोर्दिनिस्पे निर्वानर्त्त माल ॥

॥ १ ॥ सुप्रबुद्ध ॥ ॥ १ ॥ म ॥ ॥ १ ॥

॥ ततो विभुत्तान ॥ ३ तत्त्वन आचमं न्य ॥ ॥
 प्राणायाम ॥ मुलेन न्यास ॥ प्रै ह्यौ त्वाहा ॥
 इति विभूतिधारण ॥ प्रै ह्यौ सदा शिवा
 ये महायोगपतये विभूतिपतये हुं फट्
 स्वाहा ॥ इति अभिसेन ॥ ॥ प्रै ह्यौ महा

कामकलाविभूतये स्वाहा ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ प्रहो
दशकैये स्वाहा ॥ ललाटे ॥ २ गणेशाय ॥ ह
॥ २ जीव ५ ॥ हृदये ॥ २ वसु ५ ॥ वामाशे
॥ २ विष्णु ५ ॥ दक्षिणे ॥ २ रुद्र ५ ॥ नाभौ ॥
२ सदाशिव ५ ॥ पृष्ठे ॥ प्रहो महेश्वरः

वशकैये स्वाहा ॥ क कुदि ॥ इति उधुरन्
॥ ॥ प्रहो वं वरुणाये स्वाहा ॥ इ
ति जलदानमन्त्र ॥ प्रहो स्वाहा ॥ इ
ति आलोदनमन्त्र ॥ हकारादिकलत्रं
गन्धास ॥ त्रिकोटा ॥ वृत्तं कुरु शुक

त्रिकोणमभे प्रेरुर्वविन्दुमालां चतुरस्रुर्वसि
त्ये ॥ मुलमनुद्याल १० ॥ प्रेरुं ह्यौ सौत्वाः
हामहाकामलोकवस्र कालिकायेत्वा
हाः ॥ वस्ररध्वे ॥ प्रेरुं ह्यौ सौत्वा हामहाका
मकलावस्रशक्ति कालियेत्वा हा ॥ व

प्रेरुं ह्यौ सौत्वा हा ज्योति १० ॥ कौहे ॥

कपोल ॥ प्रेरुं ह्यौ सौत्वा हा ज्योतिशक्ति का
लिकायेत्वा हा ॥ हृदि ॥ प्रेरुं ह्यौ सौत्वा हा
विष्णुशक्ति कालिकायेत्वा हा ॥ वामां
शे ॥ प्रेरुं ह्यौ सौत्वा हा शिवशक्ति कालि
कायेत्वा हा ॥ दक्षाले ॥ प्रेरुं ह्यौ सौत्वा

हासुदुशक्ति कालिकायै स्वाहा॥ नमः
भो॥ ऐं ह्रीं सोमदाशिवशक्ति कालिके
स्वाहा॥ वस्ये॥ ऐं ह्रीं सो स्वाहा महाः
शिवशक्ति कालिकायै स्वाहा॥ ककुदि
॥ ऐं ह्रीं सो स्वाहा सदाशिवायै विभ्र

तिर्ये स्वाहा॥ सर्वशक्ति कालिकालिः
कायै व्यापकायै स्वाहा॥ ई व्यापकादि
शिलादिपादार्त्त॥ ऐं ह्रीं महाकाम
कलाशक्ते परचैतन्यरूपिनी॥ विभ्रः
प्राणसागतदेहशुद्धिप्रदमे॥ गा

यत्रीराजय १० ॥ तर्प्यता देवदत्त यो ॥ ॥
१ श्रीगणेशाय नमः ॥ त्रितलेना वम्य ॥ ॐ हूं
श्यात्म ५ ॥ ॐ हूं विद्या ५ ॥ ॐ हूं शिव ५ ॥ नैः
सिद्धे ॥ ॥ ॐ नासां पुन ह्यो ॥ ॐ कर्ण ह्योः ॥
ॐ शिरसि ॥ ॐ शिखायां ॥ ॐ उ पश्य प्रेन
॥ ३ ॥ न्यास ॥ अष्टोरया ॥ कर ॥ अङ्ग ॥ वः

त्रै न्यासः ॥ ॥ गङ्गादिताने ॥ ॐ हूं गं
ङ्गायै नमः ॥ यवं ॥ यमु ॥ कावेय्ये ॥ को
शिक्ये ॥ गण्डके ॥ नर्मदे ॥ प्रायु मुख्ये
॥ ॐ यमुसागरेभ्यो सर्वैर्लोकेश्वरैर्मृत्यो
नमः ॥ धेनुमुद्रा ॥ जाय ॥ ॐ हूं ॥ १० ॥ ॥
धवशिलसहाय ॥ मन्त्र ॥ ॐ हूं हयाय नमः ॥